भारतीय कलाएँ

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» कला की भाषा और उसकी अभिव्यक्ति

प्रश्न 1 (आसान). कला का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य क्या है?
उत्तर – अपने विचारों और भावों को व्यक्त करना।

प्रश्न 2 (आसान). कला और भाषा में क्या समानता है?
उत्तर – दोनों ही अभिव्यक्ति के माध्यम हैं।

प्रश्न 3 (मध्यम). एक चित्रकार 'चिड़ियाँ की चहचहाहट को गायक स्वरों में सजाता है' तो एक नर्तक क्या करता है?
उत्तर – नर्तक मन के भावों को विभिन्न मुद्राओं में सजाता है।

प्रश्न 4 (कठिन). आपको क्या लगता है, 'भीमबेटका की गुफा के चित्र' भी कला की भाषा का ही एक उदाहरण हैं? समझाओ।
उत्तर – हाँ, क्योंकि वे चित्र उस समय के लोगों के जीवन, उनके आस-पास के परिवेश और उनके भावों को बिना शब्दों के व्यक्त करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे आज की कला करती है।

» भारतीय कलाओं का सांस्कृतिक महत्व और निरंतरता

प्रश्न 5 (आसान). कौन से दो शब्द बताते हैं कि भारतीय कलाएं त्योहारों से जुड़ी हैं?
उत्तर – उत्सव और पर्व।

प्रश्न 6 (आसान). कलाएं हमारे जीवन के किन पड़ावों से जुड़ी हो सकती हैं?
उत्तर – जन्मदिन, शादी, पूजा।

प्रश्न 7 (मध्यम). आप कैसे कह सकते हैं कि भारतीय कलाएं 'प्राचीन परंपराओं की निरंतरता' बनाए रखती हैं?
उत्तर – क्योंकि ये कलाएँ हमारे त्योहारों और उत्सवों से इस तरह जुड़ी हैं कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक अपने-आप आगे बढ़ती रहती हैं, जिससे पुरानी परंपराएँ ज़िंदा रहती हैं।

प्रश्न 8 (कठिन). भारतीय कलाएं केवल 'मनोरंजन या अलंकरण' क्यों नहीं हैं, बल्कि उनका गहरा 'सांस्कृतिक महत्व' क्यों है?
उत्तर – क्योंकि ये कलाएँ सिर्फ़ देखने या सुनने में अच्छी नहीं लगतीं, बल्कि ये हमारे 'जीवन के महत्वपूर्ण आयोजनों' (जैसे जन्म, विवाह) और 'सामुदायिक त्योहारों' (जैसे फसल उत्सव) से जुड़कर हमारी संस्कृति, विश्वासों और इतिहास को दर्शाती हैं। यही जुड़ाव उन्हें गहरा 'सांस्कृतिक महत्व' देता है।

» लोक कलाओं से शास्त्रीय कलाओं का विकास

प्रश्न 9 (आसान). प्रारंभिक दौर में सभी कलाओं का संबंध किससे था? (अ) राजाओं से (ब) लोक या समूह से (स) व्यापारियों से
उत्तर – (ब) लोक या समूह से

प्रश्न 10 (आसान). किस साम्राज्य काल में कलाएँ पराकाष्ठा पर पहुँचीं?
उत्तर – गुप्त साम्राज्य

प्रश्न 11 (मध्यम). भरत मुनि के किस ग्रंथ ने कलाओं को शास्त्रीय स्वरूप दिया?
उत्तर – नाट्यशास्त्र

प्रश्न 12 (कठिन). लोक कलाओं से शास्त्रीय कलाओं के विकास में 'व्यवस्था' और 'परिष्करण' का क्या महत्व है?
उत्तर – व्यवस्था से लोक कलाओं में एक निश्चित ढांचा आया और परिष्करण से उनमें सुंदरता, सूक्ष्मता व नियमों का समावेश हुआ, जिससे वे शास्त्रीय रूप ले पाईं।

» चित्रकला: उद्गम और शैलियाँ

प्रश्न 13 (आसान). भीमबेटका की गुफाएँ किस प्रकार की चित्रकला के लिए प्रसिद्ध हैं?
उत्तर – शैल चित्रकला।

प्रश्न 14 (आसान). लघुचित्र कितने प्रकार के होते हैं?
उत्तर – दो प्रकार: स्थायी और अस्थायी।

प्रश्न 15 (मध्यम). गुप्त साम्राज्य को कलाओं का 'स्वर्ण युग' क्यों कहा जाता है? दो कारण बताइए।
उत्तर – गुप्त काल में कलाओं का बहुत विकास हुआ। इसी समय अजंता की गुफाएँ खोदी गईं और उनकी दीवारों पर सुंदर चित्र बनाए गए। इस काल की कलाकृतियों ने बाद के कलाकारों को भी प्रेरित किया।

प्रश्न 16 (कठिन). भारतीय चित्रकला में 'अस्थायी' और 'स्थायी' लघुचित्रों के बीच क्या अंतर है? उदाहरण सहित समझाइए।
उत्तर – स्थायी लघुचित्र वे होते हैं जो लंबे समय तक बने रहते हैं, जैसे कपड़ों, किताबों, लकड़ी या कागज पर बने चित्र। इनके उदाहरण हैं कलमकारी, फुलकारी, वरली, पटचित्र, मधुबनी। वहीं, अस्थायी लघुचित्र वे होते हैं जो किसी विशेष अवसर या त्योहार पर बनाए जाते हैं और फिर मिट जाते हैं, जैसे शादी-त्योहारों पर बनने वाली कोहबर, ऐपण, अल्पना, और रंगोली।

» अस्थायी कलाएँ: अल्पना, रंगोली और मंडवा

प्रश्न 17 (आसान). गुजरात में अस्थायी कला को क्या कहते हैं?
उत्तर – सत्तिया

प्रश्न 18 (आसान). रंगोली किस प्रकार की कला है - स्थायी या अस्थायी?
उत्तर – अस्थायी

प्रश्न 19 (मध्यम). मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में ज़मीन पर बनने वाली शुभ आकृतियों को क्या कहा जाता है?
उत्तर – चैकपूरना

प्रश्न 20 (कठिन). बिहार में अस्थायी कला को किस नाम से पुकारा जाता है और यह आमतौर पर कब बनाई जाती है?
उत्तर – बिहार में इसे 'अरिपन' कहते हैं, और यह मुख्य रूप से पूजा-पाठ और शुभ अवसरों पर बनाई जाती है।

» भारतीय कलाओं का वैश्विक विस्तार

प्रश्न 21 (आसान). बौद्ध धर्म के प्रभाव से भारतीय कलाएँ किन तीन देशों में फैलीं?
उत्तर – चीन, जापान, तिब्बत।

प्रश्न 22 (आसान). क्या भारतीय कलाएँ विदेशों में जाकर बिल्कुल वैसी ही रहीं जैसी भारत में थीं?
उत्तर – नहीं, 'उन कलाकृतियों के सृजन में क्षेत्रीय विशेषताएँ आ गईं।

प्रश्न 23 (मध्यम). भारतीय कलाओं का अध्ययन करने के लिए सिर्फ़ भारत की कला जानना आधी कहानी क्यों है?
उत्तर – क्योंकि 'उसे पूरी तौर पर समझने के लिए हमें बौद्ध धर्म के साथ-साथ मध्य-एशिया, चीन और जापान तक जाना चाहिए', क्योंकि 'अन्य देशों में किस प्रकार विकसित और सुरक्षित' हुई, यह भी जानना ज़रूरी है।

प्रश्न 24 (कठिन). गांधार शैली में बुद्ध की प्रतिमा और तिब्बत की शैली में बुद्ध की प्रतिमा में क्या अंतर दिखता है और यह 'वैश्विक विस्तार' के संबंध में क्या दर्शाता है?
उत्तर – गांधार शैली और तिब्बत की शैली में बनी बुद्ध की प्रतिमाओं में 'अपनी-अपनी क्षेत्रीय पहचान स्पष्ट दिखाई देती है'। यह दर्शाता है कि भारतीय कलाएँ विदेशों में फैलते हुए वहाँ की स्थानीय संस्कृति और विशेषताओं के साथ मिलकर नए रूप धारण करती हैं, लेकिन अपनी मूल पहचान को बनाए रखती हैं।

» संगीत कला: वैदिक काल से शास्त्रीय परंपरा तक

प्रश्न 25 (आसान). सामवेद में गायन निर्देशों को क्या कहा जाता था?
उत्तर – साम

प्रश्न 26 (आसान). मार्गी संगीत किससे जुड़ा था?
उत्तर – धार्मिक समारोहों से

प्रश्न 27 (मध्यम). वैदिक काल में संगीत के कितने प्रकार थे? उनके नाम बताइए।
उत्तर – वैदिक काल में संगीत के दो प्रकार थे: मार्गी और देसी।

प्रश्न 28 (कठिन). भरत मुनि के किस ग्रंथ में संगीत का प्रामाणिक वर्णन मिलता है?
उत्तर – भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में संगीत का प्रामाणिक वर्णन मिलता है।

» भारतीय संगीत की विशेषताएँ और वाद्य यंत्र

प्रश्न 29 (आसान). भारतीय संगीत की कोई एक विशेषता बताइए।
उत्तर – भारतीय संगीत सुर, ताल, राग और काल से संबद्ध है।

प्रश्न 30 (आसान). वह कौन सा वाद्य यंत्र है जिसे पानी से भरे बर्तनों से बजाया जाता है?
उत्तर – जलतरंग

प्रश्न 31 (मध्यम). यह कथन क्यों सही है कि भारतीय संगीतज्ञ किसी भी वस्तु से संगीत निकाल सकते थे?
उत्तर – यह कथन इसलिए सही है क्योंकि भारतीय संगीतज्ञ अपने आस-पास की रोजमर्रा की चीज़ों से ही वाद्य यंत्र बना लेते थे, जैसे बांस से बांसुरी या पानी से जलतरंग।

प्रश्न 32 (कठिन). रागों के समय के अनुसार गायन का भारतीय संगीत पर क्या प्रभाव पड़ता है?
उत्तर – रागों के समय के अनुसार गायन से संगीत में एक विशिष्ट 'mood' या 'भाव' पैदा होता है, जो उस समय के वातावरण से मेल खाता है। इससे संगीत और अधिक प्रभावशाली और गहरा बन जाता है, जिससे श्रोता उस भाव को महसूस कर पाते हैं।

» नृत्य कला: नाट्यशास्त्र और लोक नृत्य

प्रश्न 33 (आसान). भारतीय नृत्य कला का आधार क्या है?
उत्तर – अभिनय

प्रश्न 34 (आसान). गुजरात में डंडियों से किया जाने वाला नृत्य कौन सा है?
उत्तर – गरबा और दांडिया रास

प्रश्न 35 (मध्यम). 'नाट्यशास्त्र' के अनुसार 'नृत्य' और 'नृत्य' के बीच दो मुख्य अंतर बताइए।
उत्तर – 'नृत्य' में शब्द और भंगिमा महत्वपूर्ण हैं जबकि 'नृत्य' में भाव और भंगिमा महत्वपूर्ण हैं। 'नृत्य' कहानी कहने पर केंद्रित होता है, जबकि 'नृत्य' भावनाओं की अभिव्यक्ति पर।

प्रश्न 36 (कठिन). भारतीय लोक नृत्यों की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं और ये हमारी संस्कृति से कैसे जुड़े हैं? उदाहरण सहित समझाइए।
उत्तर – लोक नृत्यों की प्रमुख विशेषताएँ हैं कि ये समूह में किए जाते हैं, प्रकृति और जीवन से जुड़े होते हैं, तथा स्त्री-पुरुष मिलकर नाचते हैं। ये हमारी संस्कृति से इसलिए जुड़े हैं क्योंकि ये हमारे दैनिक जीवन के अनुष्ठानों, जैसे फसल कटाई (गुजरात का टिपणी) या त्योहारों (पंजाब का गिद्दा, राजस्थान का घूमर) की खुशियों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

» शास्त्रीय नृत्य और उनकी भाव-भंगिमाएँ

प्रश्न 37 (आसान). कौन-से दो शास्त्रीय नृत्य केरल राज्य से संबंधित हैं?
उत्तर – कथकलि और मोहिनीअट्टम।

प्रश्न 38 (आसान). शास्त्रीय नृत्य में भावों को अभिव्यक्त करने के लिए किन शारीरिक अंगों का प्रयोग किया जाता है?
उत्तर – आँख, भौंहों और नासिका (नाक)।

प्रश्न 39 (मध्यम). हाथों की 'मुद्राओं' से क्या-क्या दर्शाया जा सकता है?
उत्तर – मनुष्य के भावों से लेकर जानवरों के भावों तक को।

प्रश्न 40 (कठिन). आप शास्त्रीय नृत्य और लोक नृत्य में मुख्य अंतर क्या देखते हैं? संक्षेप में समझाइए।
उत्तर – लोक नृत्य स्थानीय समुदायों और रोज़मर्रा के जीवन से जुड़े होते हैं, कम औपचारिक और ज़्यादा सहज होते हैं। जबकि शास्त्रीय नृत्य कठोर नियमों, बारीकियों, भाव-भंगिमाओं और मुद्राओं पर आधारित होते हैं, जो भरतमुनि के नाट्यशास्त्र जैसे प्राचीन ग्रंथों से विकसित हुए हैं और इनमें उच्च स्तरीय प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

» भारतीय कलाओं में अंतर्संबंध और सामूहिक भावना

प्रश्न 41 (आसान). भारतीय कलाओं में अंतर्संबंध का एक उदाहरण बताएं।
उत्तर – संगीत के साथ नृत्य का होना।

प्रश्न 42 (आसान). लोक नृत्यों में कौन सी भावना देखी जाती है?
उत्तर – सामूहिक भावना।

प्रश्न 43 (मध्यम). 'वसुधैव कुटुंबकम' का अर्थ भारतीय कलाओं में कैसे झलकता है?
उत्तर – यह इस रूप में झलकता है कि कलाएँ हमें एक साथ लाती हैं, सबको जोड़ती हैं, और पूरी दुनिया को एक परिवार मानती हैं।

प्रश्न 44 (कठिन). क्या आज की आधुनिक कलाओं में भी अंतर्संबंध और सामूहिक भावना दिखती है? उदाहरण सहित समझाएं।
उत्तर – हाँ, दिखती है। जैसे आजकल के संगीत कॉन्सर्ट्स में लाइव म्यूज़िक (संगीत) के साथ डांस परफॉरमेंस (नृत्य) भी होती है, और स्टेज डिज़ाइन (शिल्प कला) भी शामिल होता है। दर्शक भी एक साथ मिलकर झूमते हैं, जो सामूहिक भावना दर्शाता है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. एक कवि अपनी कविता में बारिश की बूंदों की आवाज़ कैसे व्यक्त कर सकता है?

› पहला चरण: कवि 'टप-टप-टप' जैसे शब्दों का प्रयोग कर सकता है, जो सीधे बारिश की आवाज़ को दर्शाते हैं।

› दूसरा चरण: वह ऐसी उपमाएँ और रूपक का उपयोग कर सकता है, जैसे 'बूंदें छत पर तबला बजा रही हैं', जिससे पाठक आवाज़ और अनुभव को महसूस कर सके।

› तीसरा चरण: कविता में ताल और लय (rhyme and rhythm) का प्रयोग करके वह बारिश के गिरने की गति और ध्वनि को दर्शा सकता है, जिससे कविता खुद एक संगीतमय अनुभव बन जाए।

उत्तर – कवि 'टप-टप-टप' जैसे ध्वन्यात्मक शब्द, 'बूंदें छत पर तबला बजा रही हैं' जैसी उपमाएँ, और कविता में विशेष ताल-लय का प्रयोग करके बारिश की बूंदों की आवाज़ को प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सकता है।

उदाहरण 2. भारतीय कलाएँ हमारे जीवन और परंपराओं से किस प्रकार जुड़ी हुई हैं?

› पहला, हमें देखना होगा कि कलाएं किन 'अवसरों पर' इस्तेमाल होती हैं। जैसे, 'शादी', 'जन्म', 'पूजा' और 'फसल कटाई' जैसे उत्सवों पर।

› दूसरा, सोचिए इन अवसरों पर 'हम क्या करते हैं' जो कला से जुड़ा है? हम 'गीत गाते हैं', 'नृत्य करते हैं', 'रंगोली बनाते हैं' या 'विशेष चित्र' बनाते हैं।

› तीसरा, इन गतिविधियों से क्या होता है? ये 'हमारी खुशी व्यक्त' करती हैं और 'पुरानी पीढ़ियों की बातों' को नई पीढ़ी तक पहुंचाती हैं।

› चौथा, इसी जुड़ाव के कारण हमारी कलाएं 'निरंतर' बनी रहती हैं और हमें अपनी 'विरासत पर गर्व' महसूस कराती हैं।

उत्तर – भारतीय कलाएं हमारे त्योहारों, उत्सवों, और जीवन के हर पड़ाव (जैसे जन्म, विवाह, पूजा) से गहराई से जुड़ी हैं। यही जुड़ाव उन्हें केवल 'मनोरंजन' से बचाकर 'सांस्कृतिक परंपराओं की निरंतरता' बनाए रखने में मदद करता है, जिससे वे 'अतीत और वर्तमान को जोड़ने वाली कड़ी' बन जाती हैं।

उदाहरण 3. भारतीय शास्त्रीय कलाओं के विकास में राजाओं और शासकों की क्या भूमिका थी?

› देखो बच्चों, पहले हमारी कलाएँ 'जनजातीय और लोककला शैलियों' के रूप में थीं, यानी गांवों और समुदायों में थीं।

› फिर, 'मध्यकाल तक आते-आते', राजा-महाराजाओं ने इन कलाकारों को देखा और सोचा कि इन्हें बढ़ावा देना चाहिए।

› तो उन्होंने इन कलाकारों को 'संरक्षण' देना शुरू किया, यानी उन्हें अपने दरबार में रखा, रहने-खाने का इंतज़ाम किया और पैसे दिए।

› राजाओं ने कलाकारों को 'अपनी अभिरुचियों के अनुरूप कलाओं को सुव्यवस्थित और परिष्कृत करने के लिए प्रोत्साहित भी' किया। मतलब, उन्होंने कहा कि इसे और अच्छा बनाओ, इसमें कुछ नियम लाओ।

› इसी 'संरक्षण' के कारण ये कलाएँ सिर्फ़ मनोरंजन नहीं रहीं, बल्कि 'धीरे-धीरे शास्त्रीय नियमों में बँधीं' और 'मंदिरों और महलों में विकसित होती हुई' शास्त्रीय स्वरूप लेने लगीं।

उत्तर – राजाओं और शासकों ने लोक कलाकारों को संरक्षण दिया, उन्हें वित्तीय सहायता दी और अपनी रुचि के अनुसार कलाओं को 'सुव्यवस्थित और परिष्कृत' करने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे लोक कलाएँ धीरे-धीरे 'शास्त्रीय नियमों में बँधीं' और एक 'शास्त्रीय स्वरूप' ग्रहण कर पाईं।

उदाहरण 4. भारतीय चित्रकला में शैल चित्रों का क्या महत्व है और ये कहाँ पाए जाते हैं?

› शैल चित्र भारतीय चित्रकला के सबसे प्राचीन रूप हैं। ये तब बने थे जब मनुष्य ने बोलना भी ठीक से नहीं सीखा था।

› इन चित्रों के माध्यम से प्रागैतिहासिक मनुष्य अपने वातावरण, रहन-सहन, भावों और विचारों को व्यक्त करते थे।

› ये चित्र चट्टानों पर प्राकृतिक रंगों से बनाए जाते थे और गुफाओं में मिलते हैं।

› भारत में, मध्य प्रदेश की भीमबेटका गुफाएँ शैल चित्रों के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं, जहाँ हमें शिकार, नृत्य, संगीत और जानवरों के चित्र देखने को मिलते हैं।

उत्तर – शैल चित्र भारतीय चित्रकला के उद्गम को दर्शाते हैं, जो मनुष्य के अभिव्यक्ति का प्राचीनतम माध्यम थे। ये चट्टानों पर प्राकृतिक रंगों से बने होते थे और मुख्य रूप से मध्य प्रदेश की भीमबेटका जैसी गुफाओं में पाए जाते हैं।

उदाहरण 5. भारत के विभिन्न राज्यों में 'अस्थायी लोक कलाओं' के तीन अलग-अलग नाम बताइए, और उनका एक सामान्य उद्देश्य भी समझाइए।

› सबसे पहले, हम पाठ से ऐसे नामों को याद करेंगे जो अलग-अलग राज्यों में एक ही कला के लिए प्रयोग होते हैं।

› उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि उत्तराखंड में इसे 'ऐपण' कहते हैं।

› राजस्थान में इसी कला को 'मंडवा' नाम से जाना जाता है।

› और महाराष्ट्र में इसे 'रंगोली' कहते हैं।

› अब, इन सभी कलाओं का 'सामान्य उद्देश्य' क्या है? ये सभी 'किसी विशेष मांगलिक अवसरों' पर बनाई जाती हैं, जैसे शादी, त्योहार या कोई भी शुभ कार्य।

उत्तर – भारत में अस्थायी लोक कलाओं के विभिन्न नाम: उत्तराखंड में 'ऐपण', राजस्थान में 'मंडवा', और महाराष्ट्र में 'रंगोली'। इन सभी का सामान्य उद्देश्य 'मांगलिक अवसरों पर शुभता और सौंदर्य बढ़ाना' है।

उदाहरण 6. भारतीय कलाओं का वैश्विक विस्तार किन प्रमुख क्षेत्रों में हुआ और इस विस्तार में किस धर्म का विशेष योगदान रहा?

› पहले यह पहचानें कि भारतीय कलाएँ भारत के बाहर किन-किन देशों तक फैलीं।

› फिर यह सोचें कि किस प्रमुख धर्म ने इस विस्तार में एक पुल का काम किया।

› इन दोनों बिंदुओं को मिलाकर अपना उत्तर तैयार करें।

उत्तर – भारतीय कलाओं का वैश्विक विस्तार मुख्य रूप से मध्य-एशिया, चीन, जापान, तिब्बत, बर्मा, और कंबोडिया जैसे देशों में हुआ। इस विस्तार में बौद्ध धर्म का विशेष योगदान रहा, जिसने भारतीय कलाओं को इन क्षेत्रों तक पहुँचाया और वहाँ के स्थानीय रूपों में ढलने में मदद की।

उदाहरण 7. भारतीय संगीत की उत्पत्ति कब हुई और वैदिक काल में इसके कितने प्रकार थे?

› पहला कदम: हमें समझना है कि भारतीय संगीत की शुरुआत वैदिक काल में हुई।

› दूसरा कदम: वैदिक काल में संगीत के दो मुख्य प्रकार बताए गए हैं।

› तीसरा कदम: ये दो प्रकार थे 'मार्गी' संगीत और 'देसी' संगीत।

› चौथा कदम: 'मार्गी' संगीत धार्मिक समारोहों से जुड़ा था और 'नियम और अनुशासन से बँधा था'।

› पाँचवां कदम: 'देसी' संगीत 'लोक से जुड़ा था' और 'लोक रुचि के अनुसार यह समूह में ही गाया जाता था'।

उत्तर – भारतीय संगीत की उत्पत्ति वैदिक काल में हुई थी, जिसे लगभग 5000 ईसा पूर्व का समय माना जाता है। वैदिक काल में संगीत के दो प्रकार थे: मार्गी (धार्मिक और नियमबद्ध) और देसी (लोक से जुड़ा और समूह में गाया जाने वाला)।

उदाहरण 8. भारतीय संगीत में 'काल' का क्या महत्व है? किन्हीं दो रागों के नाम और उनके गायन का समय बताइए।

› पहला कदम: हमें समझना है कि 'काल' का मतलब यहाँ 'समय' से है। भारतीय संगीत में हर राग को गाने या बजाने का एक निश्चित समय होता है।

› दूसरा कदम: अब दो रागों और उनके समय को याद करते हैं।

› तीसरा कदम: एक राग है 'भैरव' - इसे सुबह के समय गाया जाता है, ब्रह्ममुहूर्त में।

› चौथा कदम: दूसरा राग है 'दीपक' - इसे दोपहर के समय गाया जाता है।

उत्तर – भारतीय संगीत में 'काल' का अर्थ है समय का महत्व। हर राग एक विशिष्ट समय से जुड़ा होता है। उदाहरण के लिए, 'भैरव' राग सुबह के समय गाया जाता है, और 'दीपक' राग दोपहर के समय गाया जाता है।

उदाहरण 9. भारतीय नृत्य कला का मूलशास्त्र क्या है? 'नृत्त्य' और 'नृत्य' में क्या अंतर है?

› पहले यह बताओ कि भारतीय नृत्य कला का आधार क्या है।

› फिर यह बताओ कि कौन से ऋषि का शास्त्र इसका मूल है।

› उसके बाद 'नाट्यशास्त्र' में दिए गए दो शब्दों 'नृत्त्य' और 'नृत्य' को परिभाषित करो।

› 'नृत्त्य' में क्या प्रमुख होता है और 'नृत्य' में क्या प्रमुख होता है, ये स्पष्ट करो।

उत्तर – भारतीय नृत्य कला का मूल आधार 'अभिनय' है। इसका मूलशास्त्र 'भरतमुनि का नाट्यशास्त्र' है। नाट्यशास्त्र में 'नृत्त्य' और 'नृत्य' दो शब्द मिलते हैं। 'नृत्त्य' में शब्द और भंगिमा (हाव-भाव) महत्वपूर्ण होते हैं, जिसमें कहानी या भावों को शब्दों के साथ प्रकट किया जाता है। जबकि 'नृत्य' में भाव और भंगिमा महत्वपूर्ण होते हैं, जहाँ भावनाओं को सिर्फ़ शारीरिक चाल और अभिव्यक्तियों से दर्शाया जाता है।

उदाहरण 10. शास्त्रीय नृत्य में 'मुद्राओं' का क्या महत्व है और ये कैसे भावों को अभिव्यक्त करती हैं?

› समझें कि 'मुद्राएँ' हाथों की विशेष पोज़िशन्स होती हैं।

› ध्यान दें कि ये केवल हाथों की सजावट नहीं हैं, बल्कि ये 'संकेत' हैं।

› उदाहरण के लिए, 'मयूर मुद्रा' से मोर को दर्शाया जाता है, 'हंस मुद्रा' से हंस को।

› यह भी देखें कि अलग-अलग भाव जैसे प्रेम, क्रोध, भय को भी इन्हीं मुद्राओं से दर्शाया जाता है।

› निष्कर्ष निकालें कि मुद्राएँ शास्त्रीय नृत्य की भाषा हैं, जो बिना शब्दों के पूरी कहानी या भाव बता सकती हैं।

उत्तर – शास्त्रीय नृत्य में 'मुद्राएँ' हाथों की विशेष भंगिमाएँ होती हैं जो बिना शब्दों के ही विभिन्न भावों, विचारों और यहाँ तक कि कहानियों को भी दर्शाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम हैं। ये नर्तक को पशु-पक्षियों, प्रकृति के तत्वों और मानवीय भावनाओं को सूक्ष्मता से प्रस्तुत करने में सहायता करती हैं।

उदाहरण 11. भारतीय कलाओं में अंतर्संबंध और सामूहिक भावना के किन्हीं दो उदाहरणों का वर्णन करें।

› पहला उदाहरण: उत्तर भारत में बाँस से जुड़ी कलाएँ। बाँस से 'बाँस नृत्य' होता है, जो नृत्य कला का हिस्सा है। इसी बाँस से 'बाँस क्राफ़्ट' बनता है, जो हस्तकला या शिल्प कला का उदाहरण है। और इसी से 'बाँस के वाद्य यंत्र' बनते हैं, जो संगीत कला का हिस्सा हैं। ये तीनों एक ही सामग्री से निकलकर एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

› दूसरा उदाहरण: लोक नृत्यों में सामूहिक भावना। हमारे देश के कई लोक नृत्यों में, जैसे भांगड़ा या गरबा में, लोग एक साथ घेरा बनाकर नाचते हैं। 'एक ताल में पैरों का उठना, हाथों का एक-दूसरे से जुड़ना' दिखाता है कि कैसे ये कलाएँ व्यक्तियों को एक साथ जोड़ती हैं, उनमें एकता और प्रेम की भावना जगाती हैं।

उत्तर – बाँस से जुड़ी कलाएँ (नृत्य, शिल्प, वाद्य यंत्र) अंतर्संबंध दिखाती हैं, और लोक नृत्यों में एक साथ मिलकर नाचना

सामूहिक भावना का उदाहरण है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह भाग 'भारतीय कलाओं की विशेषताओं' और 'उनके महत्व' पर आधारित प्रश्नों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

• इस भाग से अक्सर उन देशों के नाम पूछे जाते हैं जहाँ भारतीय कलाओं का विस्तार हुआ, और बौद्ध धर्म की भूमिका पर प्रश्न आ सकते हैं।

• यह भाग बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। वैदिक काल के संगीत के प्रकारों और 'सामवेद' व 'नाट्यशास्त्र' में इसके वर्णन पर खास ध्यान देना।

• नाट्यशास्त्र में वर्णित 'नृत्य' और 'नृत्य' के बीच के अंतर को उदाहरण सहित समझने वाले प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछे जाते हैं।

• इस अवधारणा पर अक्सर 'भारतीय कलाओं में सामूहिक भावना का महत्व' या 'कलाओं के अंतर्संबंध पर टिप्पणी' जैसे प्रश्न आते हैं, तो उदाहरणों के साथ तैयारी करें।

एक नज़र में रिवीज़न

› कला विचारों, भावों और परिवेश को व्यक्त करने का माध्यम है।

› कलाएँ त्योहारों, जीवन से जुड़ीं; परंपराओं और अतीत-वर्तमान को जोड़तीं।

› बौद्ध धर्म के कारण भारतीय कलाएँ मध्य-एशिया, चीन, जापान, तिब्बत, बर्मा, कंबोडिया तक फैलीं, क्षेत्रीय रूपों में ढलीं।

› वैदिक काल से मार्गी/देसी संगीत, सामवेद में 'साम', नाट्यशास्त्र में वर्णन।

› नृत्य कला: नाट्यशास्त्र आधार, नृत्य-नृत्य भेद, विभिन्न राज्यों के लोक नृत्य।

› भारतीय कलाएँ अंतर्संबंधित, सामूहिक भावना दर्शाती हैं (जैसे बाँस, लोक नृत्य); 'वसुधैव कुटुंबकम' से जुड़ी।